इस अंक में

क्रमांक S. No.	Topic । विषय	पृष्ठ संख्या । Page No.	
	Translation । अनुवाद		
1.	अनुवादक के रूप में निर्मल वर्मा का मूल्यांकन: रज्जन प्रसाद शुक्ला	1-7	
	Art -Discourse । कला-विमर्श		
2.	Various Items of "Purvaranga – Preliminaries of a Play" in Nāṭyaśāstra and Kutiyattam: A Comparison: Dr. Chavan Pramod R.	08-20	
3.	कोकना-कोकनी आदिवासी समाज के लोकवाद्य: कु निलेश शिवाजी देशमुख	21-25	
4.	भारतीय रंगमंच में स्त्रियों का प्रवेश: स्वाति मौर्या	26-31	
5.	बंसी कौल : विविधता और अन्विति का अनोखा रंग-संसार- डॉ. प्रोमिला	32-37	
6.	रंग समीक्षा- कब्र से उठती इन्सानी रूहों की आवाज: दिनेश कुमार पाल	38-41	
7.	भारतीय सिनेमा और वेब-सीरिज़ में 'Banality of evil' ('बुराई की साधारणता'): पल्लवी	42-47	
8.	इक्कीसवीं सदी का लोक और भोजपुरी सिनेमा: डा. अमरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, डा. अर्पिता कपूर	48-55	
9.	गांधी और सिनेमा का अंतर्संबंध: आकाश कुमार	56-65	
	Third Gender- Discourse । किन्नर-विमर्श		
10.	भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय की स्थिति: प्रो. राजेश, विशाल कुमार गुप्ता	66-79	
11.	हिंदी उपन्यासों में तृतीय लिंगी वर्ग और उनकी समस्याऐं: शिवांक त्रिपाठी	80-90	
	Dalit and Tribal- Discourse । दलित एवं आदिवासी विमर्श		
12.	दलित कविता की प्रेरणा, प्रवृत्ति और प्रयोजन: डॉ.गंगाधर चाटे	91-99	
13.	दलितों के प्रेरणा स्रोत महात्मा ज्योतिबा फुले: फातिमा बीवी आर	100-104	
14.	आदिवासी कविता में प्रकृति: श्रीलेखा के. एन	105-113	
	Child- Discourse । बाल -विमर्श		
15.	दलित आत्मकथाओं में बाल जीवन का मनोवैज्ञानिक पक्ष: तरुण कुमार	114-121	
16.	प्रकाश मनु के काव्य-साहित्य में बाल सरोकार: पूजा रानी	122-128	
	Language- Discourse। भाषिक-विमर्श		
17.	भारतीय संविधान में राष्ट्र (संघ), राज्य और भाषा का अन्तः सम्बन्ध और उससे जुड़ी समस्याएँ: सुमित कुमार	129-141	
18.	विज्ञापन-भाषा में विचलन की भूमिका: डॉ. आशा पाण्डेय	142-149	

Media-Discourse । मीडिया-विमर्श			
19.	पत्रकारिता का अर्थ एवं स्वरूप: डा. अनिल कुमार सिंह	150-154	
Political-Discourse । राजनीतिक-विमर्श			
20.	जनमत निर्माण में नारों की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (भारतीय चुनाव के विशेष संदर्भ में)- डॉ. शिवेंद्र मिश्रा	155-162	
Education-Discourse । शिक्षा-विमर्श			
21.	लोक में तालीम और तमीज: डॉ.लक्ष्मीकान्त चंदेला	163-172	
	Feminist- Discourse । स्त्री- विमर्श		
22.	भारतीय लोकतंत्र में नारी सहभागिता: मिथक या सत्य- दीपिका सिंह	173-200	
	Literature- Discourse । साहित्यिक-विमर्श		
23.	भारत का विश्व-बंधुत्ववादी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद (रामधारी सिंह दिनकर के गद्य साहित्य के आलोक में): तरुण पालीवाल	201-209	
24.	आधुनिक कविता और लोकभाषाएँ: डॉ. संतोष कुमार	210-227	
25.	चांद का मुंह टेढ़ा है: नये परिप्रेक्ष्य में: अमित कुमार	228-234	
26.	जयशंकर प्रसाद की आत्माभिव्यक्तिपरक कविताएँ और निर्वैयक्तिक चेतना: डॉ .अर्चना त्रिपाठी	235-243	
27.	संवेदना और सरोकारों की शिल्पी: उषाकिरण खान- डॉ. अंजु	244-250	
28.	अंधविश्वास को मिटाने वाले प्रकाश पुंज: संत गुरू घासीदास- मनीष कुमार कुर्रे	251-262	
29.	श्रीमती यशोदा देवी की कहानियों का वैशिष्ट्य: डॉ. रुचिरा ढींगरा	263-269	
30.	"ग्रामीण सभ्यता पर नगरीय सभ्यता का प्रभाव" ('अलग-अलग वैतरणी' उपन्यास के विशेष सन्दर्भ में)- रवि यादव	270-274	
31.	कहानी को छोटी मुँह बड़ी बात कहनेवाले नामवर जी की आलोचना: डॉ.एम.अब्दुल रजाक	275-281	
Article । लेख			
32.	बौद्धिक संपदा अधिकार: उर्मिला शर्मा	282-286	